

---

# Adarsha Shiksha Paddhati

---

## आदर्श शिक्षा पद्धतिः

---

### Document Information

Text title : Adarsha Shiksha Paddhati

File name : AdarshashikShApaddhatiH.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : Kapiladeva Dwivedi

Proofread by : Mandar Mali

Translated by : Mandar Mali

Description/comments : Rashtragitanjali, Kapiladeva Dwivedi (Ed.)

Acknowledge-Permission: Kapiladeva Dwivedi, Vishvabharati Anusandhan Parishad, Varanasi

Latest update : May 1, 2020

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 31, 2020

*sanskritdocuments.org*

---


## आदर्श शिक्षा पद्धतिः



(शार्दूलविक्रीडित वृत्तम्)

ज्ञानोद्रेक-प्रणांशिताखिलमला दुःखौघ-विध्वंसिनी,  
कर्तव्याऽश्रयणे प्रवृत्ति-मति-दा दुष्कर्म-संहारिणी ।  
लोकाऽज्ञान निवारणे धृतिमति- विज्ञान-धी-भास्वरा,  
शिक्षा स्याज्जगता हिताय नितरां कल्याणधुक् कीर्तिदा ॥ १  
लोकस्याऽभ्युदयं तनोति सततं निःश्रेयसः शासती,  
लोके ज्ञान-तप-प्रमोद-सुख-धा दुखाऽऽधि-संहारिणी ।  
सद्भावाऽऽश्रयता गता, गुणगणे निष्ठा दधत् सात्त्विकी,  
शिक्षा-पद्धतिरस्तु सर्व-जगति क्षेमाय शान्त्यै श्रियै ॥ २  
सा शिक्षा न, गुणोच्चयं गुणिजने नो पोषयेत् पुष्टिदा,  
या नो जागरयेज्जने कृति-रतिं सत्ये च निष्ठा ध्रुवाम् ।  
सा शिक्षा, श्रुति-शास्त्र-बोध-निपुणा या धर्म-वृत्ति प्रदा,  
सच्चारित्र्य-प्रदान-तोषित-मन-कामा, न कामाश्रया ॥ ३  
अज्ञानान्ध-तमः-प्रणोद-प्रवणा लोकोपकृत्येकदृक्,  
पाषण्डादि-निवारणैक-मतिदा मोदावहा मानिनाम् ।  
सद्वृत्तेन विवर्धिताऽखिल-गुणा या शस्यते ज्ञानिषु,  
या देहाऽन्म-मनो विकास-रुचिरा शिक्षाऽस्तु सा श्रेयसे ॥ ४  
सत्याऽचार-विचार-शिक्षण-परा, सार्वज्ञिकीमुन्नतिं,  
छात्राणां विदधद्, विवेक विनयाऽऽचार-प्रचारैकधी ।  
चारित्र्योन्नति-साधिका, गुणगणैः सारल्य-संसाधिका,  
लोकेषु प्रचरेत् मुशिष्य-जनि-दा, शिक्षा सदा कामधुक् ॥ ५

Proofread by Mandar Mali

——  
*Adarsha Shiksha Paddhati*

pdf was typeset on May 31, 2020

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

